IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिन्दी साहित्य में पर्यावरण

डॉ. नीलिमा दुबे

एशोशिएट प्रोफेसर

न्यु होराइज़न कॉलेज

भारतीय संस्कृति कुछ परंपराओं या पहनावे का ही नाम नहीं है, वरन इसके मूल में एक व्यापक और परिपक्व सोच दिखाई देतीहै।यही कारण है कि हमारी परंपराए केवेल कोई घटनाएं नहीं बलकी इनको स्थापित करना हमारे पूर्वजों की वैज्ञानिक और तार्किक प्रक्रिया का योजनदबद्ध कार्य है। स्वच्छता से लेकर स्वास्थ्य,धनार्जन से लेकर परमार्थ, व्यक्ति से लेकर समष्टि सभी कुछ बहुत ही व्यवस्थित तरीके से हमारी जीवन शैली में डाला गया है।इसके दर्शन हिन्दी साहित्य में भी व्यापक रुप से दिखाई देते हैं। यहां ध्यान देने योग्य है कि पर्यावरण और मानव जीवन हिन्दी साहित्य में एक दूजे के पूरक है ।

हिन्दी में पर्यावरण शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। 'परि' यानि चारों ओर या आस-पास ,और 'आवरण'यानि घेरा। इस प्रकार पर्यावरण का अर्थ हुआ जो भी हमारे आस-पास है जैसे- धरती , आकाश,वायु, जल, पेड-पौधे, प्राणी इत्यादि। इन सभी से मिलकर बनी है प्रकृति। इसी प्रकृति की गोद में हर इंसान सांस लेता है।इसी के पांच तत्वों से मिलकर मानव शरीर बनता है। महाकवि तुलसी दास जी ने भी रामचरित मानस के किष्किंधा कांड में लिखा है:-

छिति जल पावक गगन समीरा।

पंच रचित अति अधम सरीरा॥

प्राचीन काल से ही हमारे पूर्वजों ने हमें सिखाया है कि किस प्रकार हम प्रकृति की उपज है और हमें इसके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए।बरगद, पीपल, नीम, तुलसी आदि पेडों की पूजा का विधान बनाया कि हम उनके औषधिय गुणों को पीढी दर पीढी यथावत बनाये रखे।

धरती को भी पूजा गया तथा इसे माता का दर्जा दिया गया जिससे किसी भी तरह का वैमनस्य नुकसान मृदा को न पहुंचाया जाय। वृक्षों की सुरक्षा हो सके। इसलिए उनका संबंध माता-पुत्र का संबंध माना गया। पं हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'कुटज' निबंध में लिखा है कि

"यह धरती मेरी माता है और मैं इसका पुत्र हूं। इस्लिए मैं सदैव इसका सम्मान करता हूं और मेरी धर्ती माता के प्रति नतमस्तक हूं।"

वनों , जंगलों का हमारे जीवन में विशेष महत्व है। वेदो उपनिषदो,पुराणों,स्मृतियों में इन्न सब की स्तुतियां इनके महत्व को दर्शाती है। ऋषि मुनियों का नगरों से दूर वन प्रदेश में रहना ,उनकी जीवन शैली का अहम हिस्सा था।

कबीर, तुलसी ,रैदास , गुरूनानक, रविदास जैसे कवियों ने प्रकृति को क्षति पहुंचाने के विरूद्ध आवाज उठाई थी। तुलसीदास जी की रामचरित मानस में राम गंगा पूजन करते तथा सीता पौधों को सीचती हुई बतायी गयी है। एक प्रसंग में जब समुद्र से श्रीराम रस्ता मांग रहे थे,तब लक्षमण ने सुझाव दिया था कि समुद्र को सुखाकर मार्ग बना लिया जाय। तब श्रीराम ने उन्हें समझाया था कि यह पर्यावरण के लिए ठीक नहीं होगा। साथ ही समुद्र की सभी वनस्पतियां और जीव नष्ट हो जायेगें।

रीतीकालिन हिन्दी साहित्य भी इस विषय को लेकर साहित्य मिलता है।

'सीतलता रू सुबास को घटै न माहिमा मूरू।

पीनस वारै जो तज्यो सोरा जानि कपूर॥'

आधुनिक हिन्दी के छायावादी कव्यधारा में प्रकृति वर्णन का विशेष महत्व है। महादेवी वर्मा, प्रसाद, पंत , निराला, मुकुट्धर पांडे आदि ने प्रकृति का मनोहारी वर्णन किया और लोगो को पर्यावरण के प्रति सचेत रहने के लिए प्रेरणा दी है। कामायनी. झरना, कुसम,घूंट,लहर आदि इसके प्रमाण हैं। उदाहरण:-

"देखे मैने वे शैल श्रृंग जो

अचल हिमानी से रंजित

उन्मुक्त उपेक्षा भरे तुंग

अपने जड गौरव के प्रतीक

वसुधा का कर अभिमान भंग

अपनी समाधि में रहे सुखी

बह जाती नदियां अबोध कुछ

स्वेत बिंदु उनको लेकर

वह स्तंभित नयनगत

शोक क्रोध स्थिर मुक्ति

प्रतिष्ठा में वैसी चाहत नहीं

इस जीवन की तो मैं अबोध गति"

वर्तमान हिन्दी साहित्य में भी पर्यावारण चितन दिखाई देता है। नरेश अग्रवाल की 'अंतिम संस्कार' कविता में वृक्षों की कटाई की ओर ध्यान खींचा है:-

मैं गुज़र रहा था

अपने चिर परिचित मैदान से

एकाएक चीख सुनी

जि मेरे प्रिय पेड की थी

कुछ लोग खडे थे

कुल्हाडी लेकर

वे काट चुके थे

पांव भी काट्ने वाले थे

हम लोग लाश उठा रहे थे

अंतिम संस्कार भी करा देगे

तुम लाश ले जाना।"

प्रयोगवादी काव्य में भी पर्यावरण के अंतरसंबंध की झलक मिलती है।सागरिका में प्रकाशित अज्ञेय की कविता द्वारा लोगो को सचेत करने का प्रयास किया गया है।

"हैलो मनुष्य मैं आकाश हूं

कल सृजन था निर्माण का

आज प्रलय हूं विनाश हूं

मेरी छाती जो छेद

होगये है काले काले

ये तुम्हारे भाले के घाव हैं

ये कभी नहीं भरने वाले'

ठीक इसीप्रकार आम फिर बौरा गये,अशोक के फूल, मनुष्य का भविष्य एसे निबंध हैं जिनमें पर्यावारण की चिंता का वर्णन है।

यह कहना अनुचित न होगा कि हिन्दी साहित्य में पर्यावरण के हर तत्व के प्रति सचेत है, तथा पूरी जिम्मेदारी से अपने कत्स्र्व्य को निभा रहा है, जिससे मानव जाति को बेहतर भविष्य मिल सके।

संदर्भ ग्रंथ----

१ तुलसीदास, 'रामचरितमानस', किष्किन्धाकाण्ड, श्लोक 11 में चौपाई 2, गीताप्रेस, गोरखपुर |

२ हजारी प्रसाद द्विवेदी, 'हजारीप्रसाद द्विवेदी ग्रन्थावली', 'कुटज', अंक -9 पृ.32, राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि 0 , नई दिल्ली |

३ जयशंकर प्रसाद, 'कामायनी', प्रथम संस्करण 1995

४ नरेश अग्रवाल माध्यम, सहस्त्राब्दी अंक – 9,जनवरी-मार्च 2003, संपा0 – डॉ0 सत्य प्रकाश मिश्र, पृ.- 80

५ जयशंकर प्रसाद, 'कामायनी', प्रथम संस्करण 1995 पृ.- 02

६ ऋषभदेव शर्मा, 'मै आकाश बोल रहा हूँ', ताकि सनद रहे, सागरिका पत्रिका पृ.- 52